"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोस्त्वकर्मणि।।"

अर्थ-----

कर्म करने मात्र में तुम्हारा अधिकार हो? फल में कभी नहीं । तुम कर्मफल के हेतु वाले मत होना और अकर्म मे भी आसक्ति न हो।।

गीता का ये श्लोक हमें कर्म की प्रधानता सिखाता है , हमें सिर्फ अपने कर्तव्यों का निर्वाह सच्चे मन से करना चाहिए, उसके परिणाम के बारे में नहीं ।

परन्तु आज के समय में ऐसा नहीं है लोग कोई भी काम करने से पहले ये सोचते है कि इससे हमें क्या लाभ होगा और उससे अगर उन्हें ज्यादा फायदा नहीं हो तो काम को करने से कतराते है।

यह सही नहीं हैं, हमारा हेतु निष्काम कर्म करना और फल अच्छा हो या बुरा तब भी पूरी लगन से काम करते रहना है।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT